नीली जिव्हा (ब्लू टंग)

परिचय

नीली जिव्हा से संक्रमित भेड में फफोले एवं घाव

- यह प्रधानत्या भेड़ों में पाया जाने वाला एक तीव्र विषाणु जनित रोग है जो प्रभावित पशु में तेज ज्वर, मुख पाक, नजला, आंत्रशोथ एवं लंगड़ाहट के रूप में प्रकट होता है।
- यह रोग मुख्यतः भेड़ों में पाया जाता है यद्यपि गाय, भैंस एवं बकरी में भी देखा जा सकता है।
- सभी आयु वर्ग की भेड़ों में यह रोग पाया जाता है परन्तु 1 साल तक की भेड़े अधिक संवदेनशील होती हैं।
- रोग की प्रभावन दर 50–75% तथा मृत्यु दर 20–40% उल्लेखित है।
- इस रोग का संचरण मुख्यतः क्यूलेक्स मच्छर द्वारा होता है ।
- सामान्यतः वर्षाकाल में संवाहक कीटों की अधिकता के कारण यह रोग महामारी का रूप ले सकता है।

लक्षण

- युवा भेड़े रोग के प्रति वयस्क भेड़ो की तुलना में अधिक संवेदनशील होती है।
- रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तेज बुखार, (105–107° फा0), लार की अधिकता, नासिका स्राव, मुख एवं नाक की श्लेष्मिक झिल्ली की लालिमा आदि लक्षण देखे गये हैं ।
- होंठ, मसूढ़े, दंतासन एवं जीभ पर सूजन आ जाती है।
- प्रभावित पशुओं में लंगड़ाहट एवं अत्याधिक दुर्बलता हो जाती हैं।
- रोग से उबर चुके पशुओं में दौरे, गर्भपात तथा खुरों और त्वचा का फटना भी देखा गया हैं।
- अन्य गोपशुओं में भेड़ो की अपेक्षा रोग की तीव्रता कम होती है।

नीली जिव्हा (ब्लू टंग)

चिकित्सा

- इस रोग के लिए कोई निश्चित चिकित्सा उपलब्ध नहीं है।
- मुख के घावों को कम तीव्रता वाले संक्रमण नाशी घोल जैसे फिटकरी, या लाल दवा से धोकर जेनसिन वायलेट के घोल का लेप करें ।
- बहुप्रभावी ऐन्टिबायोटिक जैसे स्ट्रेप्टोमाइसिन, टेट्रासाइक्लीन, इरिथ्रोमाइसिन, जेन्टामाइसिन का उपयोग कर इसके संक्रमण को रोका जा सकता है।
- अतिपरासारिक (हाईपरटोनिक) ऐलर्जी रोधी एवं शोथ रोधी औषधियों का प्रयोग लाभकारी होता हैं।

रोकथाम

- ब्लूटंग का टीका वर्षा ऋतु के शुरू होने के एक माह पूर्व दिया जाना चाहिए।
- सामान्यतः साफ सफाई के साथ कीटो एंव मच्छरों को नष्ट कर रोग को बाड़े में प्रवेश करने से रोका जा सकता है।
- मच्छरों एवं मक्खियों को रोकने के लिए कीटनाशी औषधि जैसे किलेक्स कार्बोरिल (50%) का 1% सान्द्रता में या मैलाथियोन 0.02% या डेल्टामेथ्रिन 0.02% का प्रयोग किया जा सकता है।
- नये पशुओं को बाड़े में डालने से पूर्व उनकी जाँच करनी चाहिए तथा उन्हे संगरोध किया जाना चाहियें।

लेखक :

डॉ0 अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग

डॉ0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय

डॉ0 रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक

डॉ0 अभिषेक, वैज्ञानिक (एस0एस0) जीवाणु एवं कवक विज्ञान विभाग

भाकृअनुप ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान 1889 IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ

भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.

Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304